2 जुलाई 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन
प्रातः 7.00 से 7.30 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 7 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जुलाई (प्रथम), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

लंदन में डॉ. भारिल्ल द्वारा धर्मप्रभावना

लंदन : प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल यहाँ प्रवचनार्थ पधारे, जिससे यहाँ के जैनसमाज में अत्यंत हर्ष की लहर दौड़ गई। सभी साधर्मीजनों ने डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के माध्यम से तत्त्वज्ञानरूपी अमृत का पान किया।

दिनांक 12 से 19 जून तक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा प्रात: प्रवचनसार के ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन पर एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक के सम्यक्त्वसन्मुख मिथ्यादृष्टि प्रकरण पर अत्यन्त मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। डॉ. भारिल्ल की अत्यंत रोचक प्रवचन शैली से युवा एवं बुजुर्ग दोनों ही वर्ग अत्यंत प्रभावित हुये।

ज्ञातव्य है कि डॉ. भारिल्ल अमेरिका प्रवास पर हैं एवं अपने मार्मिक प्रवचनों व आकर्षक शैली से अनेक साधर्मियों को तत्त्वज्ञान का लाभ प्रदान कर रहे हैं, जिसके विस्तृत समाचार आगामी अंकों में दिये जायेंगे।

शिकागो व डलास (अमेरिका) में धर्मप्रभावना

(1) शिकागो : यहाँ दिनांक 2 से 8 जून तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रतिदिन तत्त्वार्थसूत्र के आधार से चतुर्गति के दुखों का स्वरूप बताते हुए मोक्ष प्राप्ति के उपाय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दिनांक 7 जून को विशेष रूप से पण्डित राजमलजी पवैया द्वारा रचित बृहत् शान्तिविधान का भव्य आयोजन किया गया।

(2) डलास : यहाँ जैन सोसायटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास द्वारा दिनांक 8 से 15 जून तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के विशेष आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इस अवसर पर प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार की गाथा 49 पर एवं सायंकाल तत्त्वार्थसूत्र के 5वें अध्याय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

दिनांक 13 व 14 जून को विशेष शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें तत्त्वार्थसूत्र के छठे अध्याय के आधार से विविध कर्मों के आस्रवों के कारण, गुणस्थान विवेचन के आधार से पांचवाँ, छठा व सातवाँ गुणस्थान तथा नयपद्धति व चार अनुयोग आदि विषयों पर 2 दिनों में लगभग 14 घंटे तत्त्वज्ञान की धारा बही।

समस्त कार्यक्रमों में शताधिक लोगों ने धर्मलाभ लिया। कार्यक्रम का संयोजन व संचालन श्री अतुलभाई खारा ने किया।

आध्यात्मिक ज्ञानदान ही सभी प्रकार के दानों में सर्वोत्तम है

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आध्यात्मिक ज्ञानदान ही सभी प्रकार के दानों में सर्वोत्तम है; क्योंकि यह अनंतकाल तक जीव के साथ रहेगा और जीव को सिद्धशिला तक ले जायेगा।

ज्ञानदान का प्रभाव दीर्घजीवी होने के कारण सर्वोत्तम है।

तीर्थंकर और गणधर भी मात्र यही उपकार करते हैं।

लौकिक शिक्षा (ज्ञान) मात्र इसी जीवन में योगदान करेगा और यह मोक्ष का मार्ग नहीं, **मात्र संसार बढाने में ही योगदान करेगा।**

एक बात और ज्ञान आप कितना ही बांटिये, कभी कम नहीं होगा, कम नहीं पड़ेगा, कितने ही काल तक, कितने ही लोगों को, कितने ही क्षेत्र में बांटते रहिये बस।

भूखे को भोजन करवाना भी है तो उत्तम कार्य, पर आप कितना कर सकते हैं ? 1-2-4, 10-20, 100-200, 1000-2000 लोगों को ?

वह भी कितने दिन ?

कहीं तो सीमा होगा ?

किसी को भोजन कराओ और कुछ ही घंटों में फिर भूखा।

क्या कोई धनकुबेर भी बिना मूल्य एक आदमी का जीवनभर भरण-पोषण करने की जिम्मेदारी ले सकता है ?

ज्ञानदान करने वाले ऐसा कर सकते हैं, **अनंत जीवों को अनंतकाल तक के लिये सुखी करने की जिम्मेदारी ले सकते हैं।**

है न महान काम ?

क्या आप यह काम नहीं करना चाहते हैं ?

यदि हाँ, तो धार्मिक शिक्षण के लिये पाठशालायें खोलने और संचालन करने में हमें सहयोग कीजिये।

सम्पादकीय -

पानी पीजे छानकर, मित्र कीजे जानकर

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

'पानी पीजे छानकर, मित्र कीजे जानकर,- यह लोकोक्ति बताती है कि यदि बीमारियों से बचना चाहते हो तो पानी सदैव छानकर ही पीओ और यदि विपत्तियों से बचना चाहते हो तो मित्र बनाने के पहले मनुष्य को अच्छी तरह से परख लो; क्योंकि दुनिया में ऐसे मतलबी मित्रों की कमी नहीं है, जो केवल स्वार्थ के ही साथी होते हैं, सम्पत्ति के ही संगाती होते हैं, विपत्ति पड़ने पर साथ छोड़कर भाग जाते हैं, अपने मतलब के लिये मित्रों को मुसीबत में डालने से भी नहीं झिझकते और समय-समय पर मित्र की कमजोरियों का अनुचित लाभ उठाने से भी नहीं चूकते।

संजू और राजू विज्ञान के ऐसे ही मतलबी मित्र थे, जिनकी गिद्ध दृष्टि सदैव विज्ञान के केवल कंचन और कामिनी पर ही जमी रहती थी। विज्ञान को इस बात का पता नहीं था कि वे वस्तुत: उसके मित्र नहीं, मित्र के रूप में आस्तीन के साँप हैं। वह तो उन्हें असली मित्र माने बैठा था।

यद्यपि उसकी पत्नी विद्या संजू और राजू के दुराचरण से शादी के पहले से ही परिचित थी, पर वह व्यर्थ में ही गड़े मुर्दे नहीं उखाड़ना चाहती थी। परन्तु संजू और राजू को हद से आगे बढते देख उसने निश्चय कर लिया था कि यदि विज्ञान को उनके चंगुल से छुड़ाने के लिये आवश्यक हुआ तो वह सबकुछ साफ-साफ बता देगी, जो उसके साथ घटा था।

विज्ञान वस्तुत: स्वभाव से अत्यन्त सरल और सज्जन व्यक्ति था, अत: वह संजू और राजू से मित्रता बढाते समय यह कल्पना भी नहीं कर सका था कि कोई व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिये मित्रता करके उसके साथ इस स्तर की धोखाधड़ी भी कर सकता है। तभी तो वह इनकी मीठी-मीठी बातों में आ गया था।

जो स्वयं सरल, सज्जन और ईमानदार होता है, वह सबको अपने समान ही समझता है; पर जब ज्ञान, सुदर्शन और विद्या के प्रयासों से धीरे-धीरे यह विश्वास हो चला था कि संजू और राजू आदि चारों साथी उसके असली मित्र नहीं है, वे केवल स्वार्थ के ही साथी हैं, तो उसको उनसे अरुचि हो गई। अब वह एक क्षण भी उनके साथ नहीं रहना चाहता था।

पर जब तक वह इस निर्णय पर पहुँचा था, तब तक बात बहुत आगे बढ चुकी थी। संजू और राजू ने धीरे-धीरे अपनापन दिखा-दिखाकर उसे ऐसे चक्रव्यूह में फंसा लिया था कि अब वह चाहने पर भी उनके चंगुल से छूटने की स्थिति में नहीं था।

उन्होंने उसे अपने विश्वास में लेकर उसके व्यापार-धंधे सम्बन्धी गुप्त बातें तो जान ही ली थीं, उसे व्यक्तिगत रूप से भी ऐसे दुराचरण का शिकार बना लिया था कि जिनका रहस्य खुलने पर उसका व्यापारिक और पारिवारिक भविष्य अंधकारमय बन सकता था। अत: अब वह उनके विरुद्ध अपना मुँह नहीं खोल सकता था और उनका साथ भी नहीं छोड़ सकता था। बस, उसकी इसी कमजोरी का अनुचित लाभ संजू और उसके साथी उठा रहे थे।

संजू व राजू मान रहे थे कि उन्हें विज्ञान की कमजोरी में एक ऐसा हथियार हाथ लग गया है, जिसके बल पर वे विद्या और विज्ञान को जैसा चाहें वैसा नचायें और जीवन भर मनमाना रुपया भी वसूलते रहें।

इसी के बल पर संजू ने अपने साथियों पर भी अपना रौब जमा रखा था। कभी-कभी अभिमान में आकर वह अपने साथियों के बीच कहा भी करता था -'' वह विद्या की बच्ची अपने आपको समझती क्या है ? विज्ञान से शादी क्या हो गई, अपने आपको महारानी ही समझने लगी है। बहुत देखे ऐसे करोड़पति ! बात-बात में व्यंग्य बाण छोड़ती रहती है, सीधे मुँह बात ही नहीं करती। देखो, उस दिन विज्ञान ने कैसा आदर सत्कार किया, पर उसने घास तक भी नहीं डाली। उल्टी चुंगटी ही भरती रही। यदि एक दिन मैंने उसे भी अपने साथ नचाकर नीचा नहीं दिखाया तो मेरा नाम संजू नहीं।''

राजू को संजू का इसप्रकार बार-बार कहना अच्छा नहीं लगता था। अत: उसका मुँह बन्द करने के लिये उसने व्यंग्य करते आगे कहा -''बेटा ! अधिक शेखी न मारा करो, नाना के आगे ननिहाल की बातें शोभा नहीं देती। यदि अपना भला चाहते हो तो उससे जरा बचकर ही रहना। पहले भी तो तुम चोट खा चुके हो ? अन्नू और अज्जू की बीवियों की बात और है, कहीं चनों के धोखे में कंकड़ नहीं चबा बैठना, वर्ना अभी तो सिर के बाल ही उड़े है, अबकी बार बत्तीसों दाँत गायब हो जायेंगे। इतने जल्दी भूल गये गर्ल्स हॉस्टल की घटना ?''

झेंप मिटाते हुये संजू बोला -''अरे ! जाने भी दे यार उन सब बातों को। जब की बात जुदी थी, पर अब तो वह मेरे चंगुल में ऐसी फंसी है कि उसे भी नानी याद आ जावेगी। देखता हूँ अब वह मुझसे बचकर कहाँ जायेगी ? यदि उसने कुछ भी गड़बड़ की तो विज्ञान सीधा जेल के सीखचों में होगा।''

जब कई दिन तक विज्ञान नहीं पहुँचा तो उसके उन चारों साथियों को चिन्ता हो गई; क्योंकि वही तो एकमात्र उनके बीच पैसे खर्च करने वाला व्यक्ति था।

सम्भावनाओं पर विचार करते हुये एक ने कहा –''सम्भव है वह इन दिनों कहीं बाहर गया हो ? पर यदि उसका बाहर जाने का कार्यक्रम होता तो या तो वह स्वयं कहकर जाता या अपने अचानक बने कार्यक्रम की खबर जरूर भिजवा देता। बीमार तो नहीं पड़ गया कहीं ? पर बीमारी की खबर भी तो नहीं दी ?''

दूसरा बोला –''बीमारी की खबर कौन भेजता ? विद्या तो हमारे पास खबर भेजने से रही। उसकी दृष्टि में हमारी औकात ही क्या है ?''

तीसरा बोला –''अरे भाई ! वह भावुक भी बहुत है, जल्दी ही लोगों के बहकावे–फुसलावे में आ जाता है। कहीं किसी और ने तो नहीं बहका लिया ? यदि वह किसी और के चक्कर में आ गया तो फिर अपना तो मजा ही किरकिरा हो जायेगा।''

चौथे ने सलाह दी –''यहाँ बैठे धूल में लट्ठ मारने से क्या होगा ? कुशलक्षेम पूछने के बहाने एक दिन उसके घर पर ही चलकर उसे सम्हाल लेना चाहिये; पर ध्यान रहे उसकी बीवी बड़ी तेज–तर्रार है, कहीं अपमान न कर दे ?''

अन्नू की बात सुनकर संजू की आँखों के सामने एक क्षण को वह हॉस्टल वाला दृश्य फिर घूम गया, जिसमें विद्या और उसकी सहेलियों द्वारा उसकी अच्छी मरम्मत हुई थी तथा धक्का मारकर निकाल दिया गया था। स्मृतिपटल पर वह दृश्य आते ही पहले तो वह प्रतिशोध की भावना से भर गया, परन्तु अपने आपको सम्भालते हुये वह बोला –''अरे ! तुम भी कहाँ छोटी–मोटी बातों में पड़ गये हो, इतना तो सब चलता ही रहता है, यदि ऐसे मान–अपमान से डरने लगे तब तो तुम दुनिया में कुछ भी नहीं कर सकते। अरे उन बहादुरों की ओर भी तो देखो, जो सौ–सौ जूते खाय तमासा घुस के देखें।''

ऐसा कहकर संजू ने मन में सोचा –''ऐसे मान–अपमान के भय से दूर–दूर भागने से थोड़े ही काम चलेगा। ये लोग तो यों ही बकते हैं, विज्ञान से मित्रता बनाकर रखनी है तो विद्या को भी पटाकर रखना ही पड़ेगा। अन्यथा यदि विद्या ने विज्ञान को अपने विरुद्ध भड़का दिया तो अपना रोज–रोज का इतना खर्चा कैसे चलेगा ? तालाब में रहकर मगर से बैर थोड़े ही रखा जाता है। और फिर विद्या जैसी विश्व सुन्दरी को पाने के लिये भी तो विज्ञान से प्रेम सम्बन्ध बढाना ही होगा। अन्यथा वह भी चंगुल में कैसे आयेगी ? डराना–धमकाना तो अन्तिम उपाय है, प्रेम प्रदर्शन से ही काम बन जाय तो इससे अच्छा और क्या है ?''

यह विचार कर उसने अपने साथियों से कहा –''कभी क्यों? अभी चले चलते हैं, विज्ञान की कुशलक्षेम पूछने। जब जाना ही है तो 'काल करे सो आज कर' कहते हुये चारों ही साथी विज्ञान के घर को चल दिये।''

घंटी की संकेत ध्वनि सुनकर जैसे ही विज्ञान ने दरवाजा खोला तो चारों साथियों को द्वार पर खड़ा देखकर एकक्षण को तो वह असमंजस में पड़ गया। ''अरे ! ये तो यहाँ भी आ गये 'रस में विष घोलने' ! इन्हें तो डाँट–डपट कर ही भगाना पड़ेगा, पर घर आये अतिथि का अपमान ? यह भी तो ठीक नहीं है। किसी मनीषी ने ठीक ही तो कहा है – द्वार पर आये अतिथि का अनादर नहीं करना चाहिये, चाहे वह शत्रु ही क्यों न हो ?''

अत: उसने कहा –''आओ मित्र आओ ! सवेरे–सवेरे अचानक यहाँ आने का कष्ट कैसे किया ?

''इसमें कष्ट की बात ही क्या है ? तुम बहुत दिनों से क्लब नहीं आये तो हमारी चिन्ता स्वाभाविक ही थी, वहाँ बैठे–बैठे चिन्ता करने के बजाय सोचा – चलो ! घर चलकर ही कुशलक्षेम पूछ आते हैं।''

संजू कहे जा रहा था –''हमें चिन्ता हुई कि तुम कहीं बीमार तो नहीं पड़ गये, दुर्घटनायें भी आजकल आम बात हो गई है; पर तुम्हें बिलकुल ठीक हालत में देखकर मन को संतोष हो गया।''

विद्या ने हल्की–सी चुटकी लेते हुये कहा –''हाँ, सो तो है ही, आप लोगों का चिन्तित होना स्वाभाविक ही है, मित्र जो ठहरे ! एक बार बीबी को भले भूल जाएँ, पर मित्र को थोड़े ही भुलाया जा सकता है। फिर आप लोगों के तो कहने ही क्या हैं ? विज्ञान जैसे भोलानाथ और लक्ष्मीकान्त मित्र मिलते ही कहाँ हैं इतनी आसानी से ? है न संजू !''

संजू ने अपमान का घूंट पीते हुये और हाँ में हाँ मिलाकर खुश करने की चेष्टा करते हुये कहा –'' हाँ सो तो है ही, हम बड़े भाग्यशाली हैं, जो हमें विज्ञान जैसा मित्र मिला है। और आप जैसी भाभी पाकर तो हमारे भाग्य ही खुल गये हैं।'' **(क्रमश:)**

शोक समाचार

जयपुर (राज.) निवासी श्री राजकुमारजी काला का शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप टोडरमल स्मारक के अनन्य सहयोगी एवं यहाँ की गतिविधियों के बहुत बड़े प्रशंसक थे। जयपुर की अनेक दिगम्बर जैन संस्थाओं के विविध पदों पर कार्यरत थे। आपके देहावसान से जैनसमाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए – *(पन्द्रहवीं किश्त, गतांक से आगे)*

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा कि – ''हम इस निष्कर्ष तक तो पहुँच जाते हैं कि मैं एक मनुष्य हूँ पर इस सत्य को स्वीकार नहीं कर पाते हैं कि मैं अनादिकाल से अनंतकाल तक रहने वाला जीव तत्त्व आत्मा हूँ।

हमें यह तथ्य कैसे स्वीकृत हो, इसके ज्ञान और स्वीकृति के बगैर अब तक हमारी क्या दशा हुई, यह जानने के लिए पढिये –

अंतिमरूप से यह निर्णय हो जाने के बाद कि मैं बालक या छात्र नहीं, पुरुष या स्त्री नहीं, हिन्दुस्तानी या राजस्थानी नहीं, जैन या अजैन नहीं, बलवान या कमजोर नहीं, छोटा या बड़ा नहीं, धनवान या गरीब नहीं, राहगीर, यात्री, सवारी, ग्राहक, मरीज, व्यापारी या कलाकार, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर या राजनेता नहीं, मैं पुत्र, पिता या भाई नहीं, मैं युवक, जवान, प्रौढ या वृद्ध नहीं। मैं शत्रु–मित्र या अपना–पराया नहीं और अंतत: मैं परमात्मप्रकाश भी नहीं और मनुष्य भी नहीं तब **यह प्रश्न सबसे अहम् हो जाता है कि आखिर मैं हूँ कौन ?**

यह तथ्य स्थापित हो जाने के बाद कि **मेरी 'मैं' की परिभाषा बदलते ही मेरे कृत्य–अकृत्य व हित–अहित बदल जाते हैं यह निर्णय करना अपरिहार्य है कि सचमुच मैं हूँ कौन, क्योंकि *जब तक यह सुनिश्चित नहीं हो जाता कि 'मैं कौन हूँ' मेरे पास करने को कुछ शेष रहता ही नहीं। करने योग्य कार्य तो मात्र वही है जो मेरे लिये हितकारी हो, 'मैं' की पहिचान के अभाव में जब मेरे हित ही सुनिश्चित व सुपरिभाषित नहीं तो मैं किसका हितसाधन करूँ ?***

अब तो मेरे पास करने के लिए एक ही काम रहता है कि मैं यह सुनिश्चित करूँ कि आखिर 'मैं हूँ कौन' और जब तक अंतिम रूप से दृढतापूर्वक यह निर्णय न हो जाए, मैं और कुछ भी न करूँ। अंतिम निर्णय होने तक मैं जो कुछ भी करूँगा वह व्यर्थ ही जायेगा।

अब तक यही तो होता आया है, अनादिकाल से अब तक मेरा सम्पूर्ण कर्तृत्व भी मेरे किस काम आया है, सब कुछ व्यर्थ ही तो हुआ है। मैं दुखी ही तो बना रहा।

अनादिकाल से हम सभी जीवों की व्यक्त या अव्यक्त, मात्र एक ही तो चाहत है, सुख की प्राप्ति की और सुख ही न मिला, लेशमात्र भी नहीं, एक पल भी नहीं तब फिर इसके बगैर तो सब कुछ व्यर्थ ही है न ?

शाश्वत सुख की बात तो जाने ही दीजिये पर क्या मैं क्षणिक सुखाभास भी भोग पाया ?

अब देखिये न ! मैं कितना मगन था अपने बचपन में, कितना सुहाना था वह मेरा बचपन ?

''चिन्ता रहित खेलना खाना और फिरना निर्भय स्वच्छंद''; पर ज्यों ही मुझमें यह अहसास पनपा कि यह बचपना मैं नहीं, यह तो चला जायेगा कुछ ही दिनों (वर्षों) में, पर मैं तो रहूँगा, मैं तो 70–80 वर्षों तक रहूँगा। तब बचपन तो बना रहा पर बचपना छूट गया, बचपन में ही बचपना छूट गया। जिसके गीत गाते हुए कवि लोग थकते नहीं, मैं बचपन से उस कथित आनन्द को भोग कहाँ पाया ?

मुझमें गम्भीरता आ गई। अपने सम्पूर्ण जीवन के लिए कुछ करने की भावना पनपी।

हालांकि मुझे खेलना–कूदना अच्छा लगता था पर वह छूट गया।

हालांकि पढने–लिखने में मेरी रुचि कम थी पर मैंने अपने आपको पढने–लिखने में ही झोंक डाला, क्योंकि मुझे अपने सम्पूर्ण जीवन के सुखी होने का उपाय जो करना था।

सम्पूर्ण जीवन को सुखी बनाने की गहरी चाहत ने मेरे वर्तमान को तो बोझ बना डाला पर क्या मुझे भविष्य में भी सुख मिल सका ?

बचपन गया और किशोरावस्था आयी, किशोरावस्था में तो मानो मेरी कल्पनाओं को पर ही लग गये थे, जिन्दगी एक सुहाना सफर लगने लगा था, स्वच्छंद विचरने और खुले आसमान में ऊँचे उड़ने को मन करने लगा था; पर मैं ऐसा कर ही कब पाया ?

नहीं।

क्योंकि ज्यों ही ऐसा कुछ भी करने को उद्धत होता कि संशय का सर्प डस जाता कि –''यह अल्हड़ अवस्था है ही कितने दिनों की, फिर तो जीवन की कठोर हकीकतों से रूबरू होना ही होगा न, यदि आज का कीमती वक्त इन कल्पना की उड़ानों में ही बर्बाद कर डाला तो मेरा भविष्य क्या होगा ?''

और मैं ठिठक जाता।

इसप्रकार किशोरावस्था भी निष्कर्ष विहीन ही व्यतीत हुई और वक्त के कन्धों पर चढकर शीघ्र ही मैं जवानी में प्रवेश कर गया।

जवानी कैसी गुजरी और वृद्धावस्था में मेरे साथ क्या हुआ यह जानने के लिए पढिये इस शृंखला की अगली (सोलहवीं) कड़ी, अगले अंक में –

(क्रमश:)

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

38वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 2 अगस्त से मंगलवार 11 अगस्त, 2015 तक)

शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

दशलक्षण पर्व हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण पर्व में जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई–मेल द्वारा भेजें।

यद्यपि सभी विद्वानों को जयपुर कार्यालय से अनुरोध पत्र डाक, एस.एम.एस./वॉट्सएप द्वारा भेजे जा रहे हैं; परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से समय पर न मिले हो तो भी अपनी स्वीकृति हमें शीघ्र नोट करा देवें।

– महामंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

स्वीकृति भेजने का पता – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.–0141–2705581, 2707458, मो.9785643202(पीयूष जैन)E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें –

उत्तर पुस्तिकाएँ तत्काल भेजें

द्विवर्षीय विशारद कोर्स उपाध्याय परीक्षा एवं त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद कोर्स शास्त्री परीक्षा के प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएँ जून 2015 में संपन्न हो चुकी हैं। जिन परीक्षार्थियों ने अभी तक अपनी उत्तर पुस्तिकायें नहीं भेजी हों, कृपया वे तत्काल भिजवा देवें, ताकि रिजल्ट एवं प्रमाण–पत्र जैसे कार्य समय पर पूर्ण हो सकें।

– ओ.पी. आचार्य (प्रबंधक– श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ)

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण–पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई–मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण–पत्र तत्काल भिजवायें। **– महामंत्री, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**

आप अपने आमंत्रण पत्र निम्न पते पर भेज सकते हैं–

पत्राचार का पता – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.–0141–2705581, 2707458, मोबा. 09785643202 (पीयूष जैन) E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र–2015

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
रविवार 16 अगस्त 2015	1. बालबोध पाठमाला भाग–1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग–1 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड –प्रथम वर्ष
सोमवार 17 अगस्त 2015	1. बालबोध पाठमाला भाग–2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग–2 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड –द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड –प्रथम वर्ष
मंगलवार 18 अगस्त 2015	1. बालबोध पाठमाला भाग–3 (मौखिक) 2. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड –द्वितीय वर्ष

नोट – (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

– ओमप्रकाश आचार्य (प्रबंधक – परीक्षा बोर्ड)

दृष्टि का विषय

13 चतुर्थ प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जबतक हम पर्याय का लक्षण नहीं समझेंगे, तबतक हम पर्याय को नहीं पहचान सकेंगे। दृष्टि के विषय में जिस पर्याय को शामिल नहीं करना है, हमें उस पर्याय का सम्यक् अर्थ समझना अत्यंत आवश्यक है। अभी तक तो हमने अपने मन में पर्याय का जो अर्थ समझ रखा है; उसी का दृष्टि के विषय में निषेध करके अर्थ का अनर्थ कर रहे हैं।

प्रवचनसार की गाथा ९३ में कहा है –

अत्थो खलु दव्वमओ दव्वाणि गुणप्पगाणि भणिदाणि।
तेहिं पुण पज्जाया पज्जयमूढ़ा हि परसमया।।९३।।

अर्थात् पदार्थ द्रव्यस्वरूप है; द्रव्य गुणात्मक कहे गये हैं और द्रव्य तथा गुणों से पर्यायें होती हैं। पर्यायमूढ़ जीव परसमय/मिथ्यादृष्टि है।

इसमें पर्याय में एकत्वबुद्धि करनेवाले को परसमय कहा है।

अरे ! उसी ग्रन्थ की जो तत्त्वप्रदीपिका टीका आचार्य अमृतचंद्रदेव ने लिखी है; उसमें उन्होंने पर्याय समझाते हुए असमानजातीय पर्याय को मुख्य किया है; देव, मनुष्य, नारकी, तिर्यंच – इन पर्यायों की बात कही है।

वास्तव में तो वहाँ असमानजातीय द्रव्यपर्याय की बात करते हुए यह कहा है कि 'मैं मनुष्य नहीं हूँ, मैं देव नहीं हूँ, मैं नारकी नहीं हूँ', वहाँ तो उन्होंने राग की भी बात नहीं की है, फिर केवलज्ञान की बात कैसे हो सकती है ? पर आज तो यह हो रहा है कि जब पर्याय से भिन्नता की बात आती है तो हम केवलज्ञान से ही आरंभ करते हैं अर्थात् मैं केवलज्ञान से भी भिन्न हूँ – ऐसा बताते हैं।

'मुख्य सो निश्चय' का अर्थ यह नहीं है कि निश्चय को मुख्य रखना या व्यवहार को कभी मुख्य नहीं रखना।

यदि व्यवहार को कभी भी मुख्य नहीं करना है तो फिर उसको जिनवाणी में रखा ही किसलिए है ?

जैसे – कोई मुझसे ऐसा कहे कि ''साहब ! आपको यह टेलीफोन देता हूँ, इसमें घड़ी भी है और इसमें अलार्म भी आप लगा सकते हो; लेकिन आपको कभी अलार्म लगाना नहीं, उसको छूना भी नहीं'' तो फिर उस घड़ी में अलार्म का औचित्य क्या रह जाता है ?

वैसे ही भगवान ने तो दोनों नय बताए हैं; लेकिन कोई कहे कि इस एक नय (व्यवहारनय) का प्रयोग करना ही नहीं, उसे खोलना ही नहीं तो फिर उस नय की उपयोगिता क्या रह जाती है?

जैसे – टेलीफोन में घड़ी भी हो और कोई कहे कि इससे मात्र घड़ी का काम लेना, टेलीफोन का काम मत लेना। जबकि उसमें मुख्यता टेलीफोन की है, घड़ी की नहीं है।

उपयोग तो व्यवहारनय का ज्यादा करना है और कोई कहे कि व्यवहारनय को मत खोलो, निश्चय को ही मुख्य रखो। लोग तो ऐसा भी कहते हैं कि गुरुदेवश्री ने भी यही कहा है कि व्यवहार को गौण रखना। भाई साहब ! गुरुदेव ने तो इस अर्थ में कहा है कि यदि आत्मा का कल्याण करना है तो आत्मा को ही मुख्य रखो और धंधे–पानी की बात को गौण कर दो।

जयपुर में लौकिक व्यवहार में ही उलझे रहनेवाले लोग कभी आत्मा की बात नहीं सुन सकते हैं, प्रवचन में भी कभी नहीं आ सकते हैं; क्योंकि जयपुर में तीन लाख जैनी रहते हैं और प्रतिदिन तिया के कार्यक्रम होते हैं। यदि राजस्थान पत्रिका या दैनिक भास्कर पढ़ो तो प्रतिदिन हमारी जान–पहिचान की चार–पाँच तिये की बैठकें जरूर होती हैं और समय तो वही है सुबह ८ बजे का, जो कि प्रवचन का समय होता है। अब यदि प्रत्येक तिये में जाना जरूरी है तो फिर प्रवचन कभी नहीं सुन पाओगे। यदि मैंने भी प्रतिदिन तिये में जाना शुरू कर दिया तो प्रवचन कौन करेगा ?

ऐसा पढ़कर कोई यह कहे कि आप हमें यह सिखा रहे हैं कि तिये में नहीं जाना अर्थात् हमारा सामाजिक व्यवहार खत्म करना चाहते हो। यदि हम किसी के तिये में नहीं आयेंगे तो हमारे तिये में भी कौन आयेगा; इसलिए हमें जाना ही पड़ेगा।

अरे भाई ! मान लो तुम सारी जिन्दगी दूसरों के तिये में गये और कहीं हवाई जहाज आदि की दुर्घटना में कहीं दूसरी जगह मर गए और तुम्हारा तिया ही नहीं हुआ तो ?

मैं अपने तिये में भीड़ इकट्ठी करने के लिए सारी जिन्दगी अध्यात्म की चर्चा छोड़ूँ और अंत में कोई मेरे तिये में नहीं आये तो क्या होगा ?

मान लो किसी महाराजजी का आदेश हो गया कि इस पण्डित के तिये में मत जाना और कोई मेरे तिये में नहीं आया तो फिर मेरी सारी जिन्दगी की तपस्या तो मुफ्त में ही चली जायेगी। वास्तव में हमारे तिये में कोई हमारे व्यवहार से थोड़े ही आते हैं, वह तो हमारे बच्चों के व्यवहार से आते हैं।

जिस मनुष्य भव में हमारी आत्मा का कल्याण हो सकता है, उस मनुष्य भव को हम तिये की भीड़ के लिए बर्बाद नहीं कर सकते हैं।

गुरुदेवश्री ने जो निश्चय को मुख्य और व्यवहार को गौण करने को कहा है, वह लौकिक व्यवहार को गौण करना इस

अर्थ में कहा है। वह कथन नयों के प्रयोग का नहीं है।

जैसे – गाड़ी में गतियंत्र (एक्सीलेटर) और अवरोधक (ब्रेक) दोनों होते हैं तो ऐसा नहीं हो सकता है कि अकेला गतियंत्र पर ही पैर रखा जाये, अवरोधक पर कभी पैर रखा ही नहीं जाये और न ही यह हो सकता है कि इन दोनों का बंटवारा कर दिया जाये कि ५० प्रतिशत पैर अवरोधक (ब्रेक) पर रखना और ५० प्रतिशत गतियंत्र पर रखना।

अरे भाई! आवश्यकता के अनुसार ही गतियंत्र (एक्सीलेटर) पर पैर रखा जाएगा और आवश्यकता के अनुसार ही अवरोधक पर पैर रखा जायेगा।

'किस समय गतियंत्र पर पैर रखना और किस समय अवरोधक पर पैर रखना' इसका निर्णय भी ड्राइवर के हाथ में ही रहेगा।

वैसे ही जैनदर्शन में भी नय को मुख्य–गौण करना अवरोधक और गतियंत्र के समान ही है और मुख्य–गौण करने का अधिकार नयों के प्रयोग करनेवालों को दिया जायेगा; क्योंकि यह सर्वज्ञ भगवान की आज्ञा है – 'वक्तुरभिप्रायो नयः' अर्थात् वक्ता के अभिप्राय को नय कहते हैं। 'नय का प्रयोग कब करना और कब नहीं करना' इसका निर्णय भी वक्ता के अभिप्राय पर निर्भर है।

जो नयों का प्रयोग करता है, उसके ऊपर यह निर्भर रहता है कि वह किस अपेक्षा का प्रयोग कब करे।

'रात्रि भोजन नहीं करना चाहिए' – यह कथन व्यवहारनय का है कि निश्चयनय का ? यदि इस व्यवहारनय के कथन को कभी भी मुख्य नहीं करेंगे तो इसका अर्थ यह हो जायेगा कि सभी को रात में खाने देना चाहिए। यदि हम ऐसा कहेंगे कि – 'शाम को भोजनालय बन्द हो जायेगा' तो व्यवहारनय 'मुख्य' हो जायेगा और व्यवहारनय 'मुख्य' करना नहीं है। अब यदि इस व्यवहार को मुख्य नहीं करेंगे तो रात में भी भोजनालय खुला रहेगा; क्योंकि रात में भोजन न करनेरूप व्यवहार को मुख्य नहीं करना है। **(क्रमशः)**

ग्रीष्मकालीन शिक्षण शिविर संपन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ पुरानी मण्डी स्थित श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में 25वाँ ग्रीष्मकालीन आध्यात्मिक बाल, युवा एवं प्रौढ चेतना शिविर दिनांक 13 से 22 जून तक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा एवं पण्डित प्रबलजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला।

इस शिविर में लगभग 90 बच्चों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये। समापन समारोह के अवसर पर सभी विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

आध्यात्मिक संगोष्ठी एवं स्नातक स्नेह मिलन समारोह संपन्न

सिद्धायतन–द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा दिनांक 13 से 15 जून तक आध्यात्मिक संगोष्ठी एवं भूतपूर्व स्नातक मिलन समारोह संपन्न हुआ।

इस अवसर पर लगभग 70 से अधिक शास्त्री विद्वानों ने तत्त्वप्रचार में चुनौतियाँ एवं समाधान विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। साथ ही तत्त्वप्रचार में सम्यक्त्व, आठ अंगों की व्यवहारिक भूमिका एवं छहढाला में मेरा प्रिय विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ। दिनांक 14 जून की रात्रि में अनौपचारिक काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर सहित अनेक स्नातक उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संयोजन पण्डित आशीषजी शास्त्री व पण्डित अरविन्दजी शास्त्री टीकमगढ ने किया। निर्देशन पण्डित विरागजी शास्त्री ने किया।

उज्ज्वल भविष्य की कामना !

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक श्री रजत जैन भिण्ड का विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा आयोजित नेट–दिसम्बर 14 परीक्षा में जे.आर.एफ. हेतु चयन हो गया है। साथ ही ए.रामदास चैन्नई, श्री जयेश जैन उदयपुर व श्री आशीष जैन मड़ावरा ने संस्कृत द्वारा एवं श्रीमती श्रुति जैन जयपुर ने जैनदर्शन द्वारा नेट–दिसम्बर 14 परीक्षा उत्तीर्ण की है।

महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

डॉ. योगेश जैन बैंकॉक में

लाडनूं (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. योगेशकुमार जैन दिनांक 24 जून को बैंकॉक गये।

इस यात्रा के दौरान उन्होंने सिल्ककॉर्न विश्वविद्यालय बैंकॉक द्वारा आयोजित 16वें विश्व संस्कृत सम्मेलन में सहभागिता दर्ज की।

इस अवसर पर डॉ. जैन विश्व संस्कृत सम्मेलन में अनेकान्तसिद्धान्त के उद्भव एवं विकास विषय पर पत्र–वाचन किया। साथ ही वहाँ केशिक्षण संस्थानों का भ्रमण कर जैनविद्या की अध्ययन–अध्यापन की जानकारी भी ली।

प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए–4, बापूनगर, जयपुर की ग्रीष्मकालीन परीक्षायें शीघ्र ही होने वाली हैं। सम्बन्धित पाठशाला केन्द्र शीघ्रातिशीघ्र छात्र प्रवेश फार्म भरकर परीक्षा बोर्ड कार्यालय को जयपुर भेज देवें।

– ओ.पी. आचार्य (प्रबंधक)

2 जुलाई 2015, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

देशभर में शिक्षण शिविरों की धूम

(1) झालरापाटन (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर समिति पिड़ावा के संयुक्त तत्त्वावधान में तीर्थधाम मंगलायतन और सिद्धायतन आयोजकत्व में मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र व कर्नाटक के 251 स्थानों पर बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें से 101 स्थानों का संयोजन पण्डित सुरेशचंदजी भिण्ड द्वारा किया गया।

शिविर का सामूहिक समापन समारोह दिनांक 18 जून को झालरापाटन में हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री जयकुमारजी कोटा, श्री सुरेन्द्रजी जैन कोटा इत्यादि अनेक महानुभावों के साथ पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित रतनजी शास्त्री कोटा, पण्डित धर्मचंदजी जयथल एवं पण्डित विक्रांतजी पाटनी झालरापाटन आदि अनेक विद्वत्गण मंचासीन थे।

मंचासीन अतिथियों द्वारा पण्डित अमितजी जैन अरिहंत द्वारा संकलित /संपादित टेबल कैलेण्डर का विमोचन भी किया गया, जिसका प्रकाशन श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन द्वारा ही किया गया।

इस शिविर के मुख्य संयोजक श्री अमितजी जैन अरिहंत, पण्डित अक्षयजी चव्हाण, पण्डित नीलेशजी घुवारा एवं पण्डित नितिनजी शास्त्री झालरापाटन थे।

संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन ट्रस्ट के महामंत्री पण्डित नागेशजी जैन पिड़ावा ने किया।

(2) सनावद (म.प्र.) : यहाँ दिग. जैन पोरवाड़ धर्मशाला में कवरचंद ज्ञानचंद पारमार्थिक ट्रस्ट एवं मुमुक्षु मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 7 से 14 जून तक तृतीय बाल-युवा-प्रौढ संस्कार/शिक्षण शिविर तथा श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुनीलजी शास्त्री शिवपुरी, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित अशोकजी उज्जैन, विदुषी राजकुमारीजी दिल्ली, विदुषी प्रमिला जैन इन्दौर एवं आत्मार्थी कन्या विद्यालय दिल्ली की छात्राओं द्वारा प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। सिद्धचक्र विधान पूजा एवं जयमाला का अर्थ ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली ने समझाया। प्रतिदिन शिक्षाप्रद व सदाचारमय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

शिविर में बच्चों एवं युवाओं को धार्मिक शिक्षा एवं सदाचार के संस्कार दिये गये, जिनका लगभग 450 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित अशोकजी उज्जैन, दिनेशजी कासलीवाल एवं आदित्यकुमारजी सनावद के सहयोग से संपन्न हुये। **– दिनेशचंद जैन, सनावद**

(3) रायपुर (छत्तीसगढ) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन छत्तीसगढ के तत्त्वावधान में द्वितीय जैनत्व जागरण संस्कार शिविर का आयोजन दिनांक 28 मई से 2 जून तक छत्तीसगढ के 10 स्थानों पर किया गया, जिसमें शंकरनगर रायपुर, चूड़ीबाजार रायपुर, बिजरी, जनकपुरी, बलौदाबाजार, दुर्ग, जगदलपुर, जैतहरी, खैरागढ, मनेन्द्रगढ आदि स्थानों पर लोगों ने अत्यंत उत्साहपूर्वक जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

शिविर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा एवं आचार्य धरसेन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा के विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ, जिसमें ब्र.नन्हे भैया सागर, पण्डित राजेशजी शास्त्री गढा, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मड़देवरा, पण्डित शनिजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित दीपकजी शास्त्री मड़देवरा, पण्डित विवेकजी शास्त्री मड़देवरा, पण्डित आशीषजी शास्त्री भगवां, पण्डित आशीषजी शास्त्री मड़देवरा, पण्डित नवीनजी शास्त्री उज्जैन, पण्डित अंकितजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित सनतजी शास्त्री बकस्वाहा, पण्डित मयंकजी शास्त्री बंडा द्वारा विभिन्न कक्षाओं एवं प्रवचनों के माध्यम से जैनत्व के संस्कारों का बीजारोपण किया गया।

शिविर में लगभग 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर का संयोजन श्री अशोकजी जैन घुवारा एवं पण्डित नितिनजी शास्त्री खड़ैरी ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 जून 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127